प्राचीन भारत में स्वर्ण एवं स्वर्णकार

मेनका कुमारी

भारतीय शिल्पकारों का भारतीय समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वर्ण को आभूषण का आकार देनेवाले स्वर्णकार अनपढ़ वैज्ञानिक थे और उनके द्वारा निर्मित आभूषणों के आधार पर इस तथ्य को समझा जा सकता है। आभूषण श्रृंगार के आवश्यक उपकरण हैं। श्रृंगार की प्रबल भावना के कारण ही आभूषणों का निर्माण तथा उसमें निरन्तर परिष्कार और विकास हुआ। मानव की सहज श्रृंगार–प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति के माध्यमों में आभूषण सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है। यही कारण है कि विश्व के सभी देशों, जातियों एवं सभ्यताओं में आभूषणों को धारण करने की परम्परा प्रारम्भ से ही मिलती है। आभूषणों के प्रयोग में स्त्री–पुरुष अथवा ऊँच–नीच जैसी कोई भेदक रेखा नहीं रही है। सभी वर्गों और जाति के लोग किसी न किसी प्रकार के आभूषणों से अपने को अलंकृत करते रहे हैं। आभूषण नख से शिख तक के सभी अंगों में धारण किये जाते थे। अंगों के अनुसार ही इनका आकार–प्रकार भी होता था। इनके निर्माण के माध्यम के रूप में किसी धातु विशेष के प्रति कोई आग्रह नहीं रहा है। समय, परिस्थिति, रुचि एवं आर्थिक तथा सामाजिक स्थितियों के आधार पर ही इनके उपादान का चुनाव होता रहा है। यही कारण है कि घास, पत्ती, पुष्प, हड्डी एवं शीशे से लेकर काँसे, पीतल, चाँदी, सोने एवं रत्नों आदि तक के आभूषणों का निर्माण काल–क्रमानुसार होता रहा है।